जिज्ञासा

रविवार को ही छुट्टी क्यों मनाते है ?

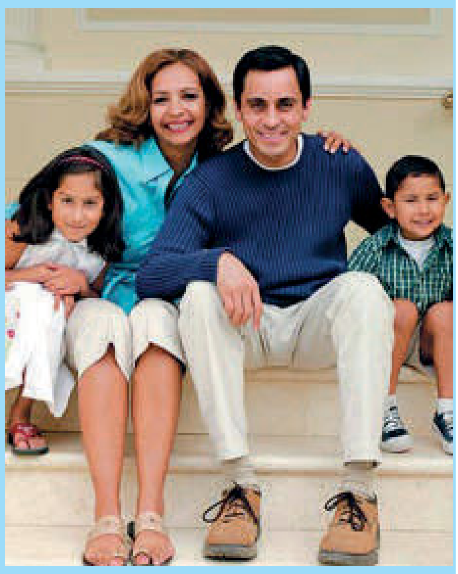

सन-डे यानी छुट्टी का दिन। मौज-मस्ती का दिन। आराम का दिन। इस दिन दुनियाभर में कोई भी इंसान काम करना पसंद नहीं करता। पर क्या आपने कभी सोचा है कि आखिर रविवार को ही छुट्टी क्यों मनाई जाती है ? क्या इसके पीछे कोई विशेष कारण है कि दुनिया के ज्यादातर देशों में इसी दिन छुट्टी मनाई जाती है और इस दिन स्कूल, कॉलेज, कार्यालय व अन्य संस्थान बंद रहते हैं ! हिंदी कैलेंडर के अनुसार रविवार से सप्ताह की शुरुआत मानी जाती है।

वहीं इंग्लिश कैलेंडर के अनुसार रविवार सप्ताह का अंतिम दिन होता है। हिंदू पंचांग के अनुसार रविवार सूर्य का दिन है और इस दिन सूर्य सहित सभी देवी-देवताओं की आराधना का विधान है। हिंदू शास्त्रों के अनुसार ऐसा माना जाता है कि रविवार सप्ताह का प्रथम दिन होता है और इस दिन पूजादि करने से पूरे सप्ताह मन शांत रहता है, सभी कार्य बिना किसी परेशानी के सफल हो जाते हैं। इस दिन सभी लोगों से धार्मिक कार्य आदि करने के उद्देश्य से ही रविवार को अवकाश घोषित किया गया। ताकि व्यक्ति के दिमाग पर कार्य का दबाव न रहे।

वहीं इंग्लिश कैलेंडर के अनुसार सन-डे सप्ताह का अंतिम दिन होता है। पूरे सप्ताह के कार्य करने के बाद वीकएंड में शरीर और दिमाग को आराम देने के उद्देश्य से रविवार को ऑफ रखा जाता है ताकि व्यक्ति से काम का प्रैशर हट जाए और फिर से रिफ्रेश होकर नए सप्ताह में नई ऊर्जा के साथ कार्य कर सके।

इसी उद्देश्य की वजह से दुनियाभर में रविवार को अवकाश रखा जाता है। यह भी हो सकता है कि अंग्रेजी राज से ही भारत में रविवार की छुट्टी का चलन शुरू हुआ हो।

हंसी के हसगुल्ले

बिल्ली की जिद

संता के घर एक बिल्ली रहती थी जिससे वह बहुत परेशान था। एक दिन संता उससे तंग आकर उसे कहीं छोड़कर आ गया पर संता के घर पहुंचने से पहले वह घर पहुंच गई।

संता दुबारा उसको बाहर छोड़कर आया पर वह फिर से घर पर वापस आ गई।

संता को बहुत गुस्सा आ गया और इस बार उसने बिल्ली को बहुत दूर ले जाकर छोड़ दिया। फिर थोड़ी देर बाद अपनी बीवी को फोन किया और पूछा कि क्या बिल्ली घर आ गई है।

बीवी - 'हां, वह पहुंच गई है।'

संता- 'उस कमीनी से बोल मुझे आकर ले जाए्ज्ं मैं रास्ता भूल गया हूं !'

संता की टांग कट गई

संता की टांग नीली हो गई, वह बंता सिंह डॉक्टर के पास गया। बंता सिंह बोला: जहर टांग में फैल चुका है इसलिए टांग काटनी पड़ेगी। उसने टांग काट कर नकली टांग लगा दी। संता सिंह : डॉक्टर जी नकली टांग भी नीली हो गई। ध्यान से देखने के बाद बंता सिंह बोला 'ओह, अब बीमारी समझ आई, जींस रंग छोड़ रही है'।

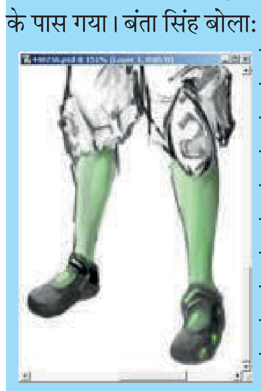

क्या आप जानते हो

- च्यूइंगगम चबाते-चबाते प्याज काटने से आंख से आंसू नहीं आते। (हालांकि प्याज काटने से आंखों में आंसू बनने की प्रक्रिया अवश्य होती है, किंतु जबड़ों के लगातार चलते रहने के कारण वे आंख से बाहर नहीं आ पाते हैं।)
- बिना खाना खाए एक महीने तक जिंदा रहा जा सकता है, जबकि बिना पानी पिए सिर्फ एक सप्ताह ही कोई व्यक्ति जीवित रह सकता है। शरीर में एक फीसदी पानी की कमी हो जाए, तो प्यास महसूस होने लगती है और 10 फीसदी पानी की कमी होने पर प्राण निकल जाते हैं।
- शहद एक ऐसा खाद्य पदार्थ है जो हजारों साल तक खराब नहीं होता। (मिस्र के फैरो की कब्रों में पाए गए शहद को पुरातत्वविदों ने जब चख कर देखा, तो पाया कि वह आज भी खाने योग्य है।)

साथ-साथ काम करना पसंद करते हैं तोते

पैरिस में हुए एक शोध के मुताबिक कुछ पक्षी अकेले काम करना पसंद करते हैं और कुछ समूह में। शोधकर्ताओं ने पक्षियों को कई काम दिए ताकि इन्हें देखकर यह समझा जा सके कि पक्षियों में एक-दूसरे के साथ सहयोग करने की समझ है या नहीं।

'ऐनिमल कॉग्निशन' नाम की पत्रिका में छपे इस शोध में पाया गया कि स्लेटी रंग के अफ्रीकी तोते किसी परेशानी का समाधान करने में अपने व्यक्तित्व के विशिष्ट पहलुओं को उभार पाते हैं। इसकी जांच करने के लिए शोधकर्ता ने जो तकनीक अपनाई, वो सबसे पहले समूह में काम करने में चिम्पान्जी की दक्षता जांचने के लिए इस्तेमाल की गई थी। अब इसी तरीके से हाथियों के एक दूसरे को सहयोग देने की क्षमता जांची जा रही है।

तीन पहेलियां

बहुत समय पहले की बात है, रूस में एक राजकुमारी रहती थी, जो स्वयं को दुनिया की सबसे बुद्धिमान स्त्री समझती थी। एक दिन उसने घोषणा करवाई कि वह उसी व्यक्ति से शादी करेगी, जो उससे तीन ऐसी पहेलियां पूछेगा, जिनका उत्तर वह न दे सके। भला ऐसा कौन व्यक्ति था, जो राजकुमारी से विवाह करने का इच्छुक न होता ? इसलिए बहुत से लोग राजकुमारी से विवाह करने का सपना लेकर दरबार में आए।

उन्होंने राजकुमारी से कठिन से कठिन सवाल पूछे, लेकिन राजकुमारी ने सभी प्रश्नों के उत्तर बड़ी सरलता से दे दिए। वे सभी निराश होकर वापस घर लौट गए।

लोगों को इस प्रकार असफल होते देखकर राजकुमारी ने सोचा कि शायद उसके राज्य में कोई भी व्यक्ति उससे विवाह करने के योग्य नहीं है। वह सोचती थी, 'क्या मेरा विवाह नहीं हो सकेगा ? यदि मुझे पता होता कि मेरे राज्य के लोग इतने मूर्ख हैं, तो मैं कभी ऐसी शर्त रखती ही नहीं।'

एक दिन की बात है। इवान नाम का एक युवा किसान प्रश्न पूछने महल में आया। जब राजकुमारी को पता चला कि एक किसान उससे पहेलियां पूछने आया है, तो पहले वह बहुत हंसी। फिर भी उसने उस किसान को एक अवसर देने का निश्चय किया।

इवान ने राजकुमारी से पहला सवाल पूछा, 'एक अच्छी चिड़िया में दूसरी अच्छी चिड़िया घुसी हुई थी। मैंने पहली अच्छी चिड़िया की अच्छाई के लिए दूसरी अच्छी चिड़िया को बाहर निकाल दिया। बताइए वास्तव में मैंने क्या किया ?'

ऐसी कठिन पहेली एक किसान से सुनकर राजकुमारी आश्चर्यचकित रह गई। उसने इवान से कहा कि वो उसकी पहेली का उत्तर दूसरे दिन देगी। इवान तुरंत इसके लिए तैयार हो गया। उस रात राजकुमारी ने अपनी नौकरानी से कहा कि वह इवान से किसी तरह उस पहेली का जवाब पूछ कर आए। नौकरानी इवान से पहेली का जवाब पूछने में संकोच कर रही थी। वह सोच रही थी कि इवान को उस पहेली का जवाब देने के लिए राज़ी कर पाना आसान नहीं होगा, लेकिन नौकरानी के पूछने पर इवान ने उस पहेली का जवाब तुरंत ही बता दिया।

नौकरानी यह समझ नहीं सकी कि इवान ने पहेली का उत्तर इतनी आसानी से क्यों दे दिया है। लेकिन उसे इससे क्या करना था ? पहेली का उत्तर तो उसे मिल ही गया था।

अगले दिन राजकुमारी ने पहेली का उत्तर बताते हुए कहा, 'तुमने गेहूं के खेत से एक गाय को भगाया था।'

इवान राजकुमारी के जवाब से संतुष्ट हो गया। फिर उसने दूसरी पहेली पूछी, 'एक दिन मैं एक जंगल से गुजर रहा था। तभी मैंने एक बुरी चिड़िया देखी। मैंने तुरंत दूसरी बुरी चिड़िया उठाकर पहली बुरी चिड़िया को मार डाला। बताइए, मैंने क्या किया ?'

राजकुमारी एक बार फिर चक्कर में पड़ गई। उसने पहेली के कई उत्तर सोचकर बताए, लेकिन इवान उन उत्तरों से संतुष्ट नहीं हुआ। तब राजकुमारी ने अगले दिन प्रश्न का उत्तर देने को कहा। राजकुमारी ने एक बार फि पहेली का जवाब पाने के लिए अपनी नौकरानी व सहायता ली। इस बार भी इवान ने बिना किसी हिचकिचाह के पहेली का उत्तर बता दिया। अगले दिन राजकुमारी इवान से कहा, 'तुम जंगल से गुजर रहे थे, तब तुमने ए सांप देखा। तुमने उस सांप को डंडे से मारा।' अब तीस प्रश्न की बारी थी। इवान ने मुस्कुराते हुए अपनी तीस पहेली पूछी, 'राजकुमारी जी, आप मात्र इतना बता दीजि कि आपने मेरी पहली दो पहेलियों का जवाब कैसे प्रा किया ?' राजकुमारी तीसरी पहेली सुनकर भोचक्का व रह गई। वह बहुत अजीब स्थिति में फंस गई थी। उस सोचा, 'अगर मैं इस प्रश्न का जवाब देती हूं, तो स जान जाएंगे कि मैंने अपनी नौकरानी की सहायता पहली दो पहेलियों का हल पाया है। अगर मैं पहेली व उत्तर नहीं देती हूं तो मुझे अपनी पराजय स्वीकार कर इस किसान से विवाह करना पड़ेगा।' फिर कुछ सोचने व बाद उसने अपने आपको पराजित घोषित कर दिया। उसव इवान से विवाह हो गया और फिर दोनों प्रसन्नतापूर्व रहने लगे।

रंग भरो

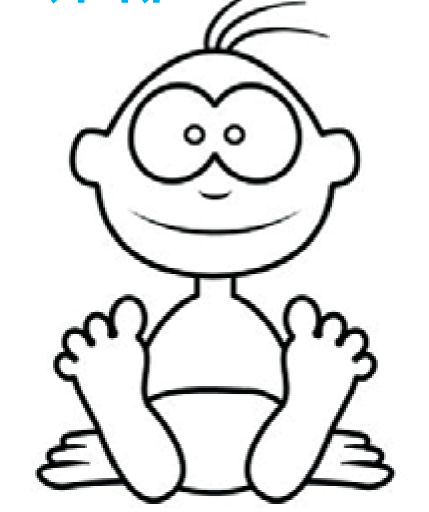

बूझो तो जाने

- गोरा-चिट्टा खूब हूं पर पहनूं नहीं पजामा मां का तो भाई नहीं फिर भी बच्चों का मामा
- मुझ से बड़ी पेट में उंगली सिर पर रखा पत्थर गोल-गोल रूप है मेरा बूझो जल्दी उतर।
- जितनी ज्यादा सेवा करता उतना घटता जाता है। सभी रंग का नीला-पीला पानी के संग भाता हूं।
- सोने की वह चीज है पर बेचे नहीं सुनार मोल तो ज्यादा है नहीं बहुत है उसका भार।
- छोटा था तो नारी था मैं, बड़ा हुआ तो नर नारी का तो कम मोल था नर की बड़ी कदर
- नहीं मैं मिलती बाग में आधी फल हूं आधी फूल काली हूं पर मीठी हूं खा के न पाया कोई भूल।
- सोने को पलंग नहीं, न ही महल बनाए एक रुपया पास नहीं फिर भी राजा कहलाए

चंदामामा, अंगूठी, साबुन, चारपाई,
अमिया-आम, गुलाबजामुन, शेर।

आप हैं कितने बुद्धिमान ?

इस आकृति को देखकर बताएं कि कितनी लड़कियां रंग-बिरंगे कपड़ों में हैं और कितनी लड़कियां ब्लैक एण्ड व्हाइट कपड़ों में हैं। इन आकृतियों में रंग भरकर आप इसकी पूरी गणना भी कर सकते हैं।

उत्तर: 12

हाई स्पीड ट्रेन

दो सौ से भी ज्यादा वर्ष बीत चुके हैं जब स्टीम इंजन का आविष्कार हुआ। इसके आविष्कारक रिचर्ड ट्रेवेथिक ने शायद कल्पना भी नहीं की होगी कि ट्रेन भी कर सकती है कभी हवा से बातें। इतना ही नहीं, उन्हें दूर-दूर इसका ख्याल भी न आया होगा कि ट्रेन प्लेन की माफिक ट्रैक पर दौड़ सकती हैं!

दरअसल, जब स्टीम इंजन बने तो उस समय ट्रेन की स्पीड महज 8 किमी प्रति घंटा होती थी। धीरे-धीरे 25 किमी. की रफ्तार को भी तेज रफ्तार ट्रेन में शुमार किया जाने लगा।

आज जबकि 500 किलोमीटर से भी ज्यादा प्रति घंटे की तूफानी रफ्तार से जब ट्रेनें चलती हैं, तो कोई भी एकबारगी दांतों तले उंगली दबाने पर मजबूर हो सकता है। रोंगटे खडे कर देने वाली ऐसी ट्रेन कहलाती हैं हाई स्पीड ट्रेन। ये बुलेट जैसी दिखती हैं, इसलिए इसे आम तौर पर बुलेट ट्रेन भी कहा जाता है। इनसे जब हजारों किलोमीटर की दूरी महज दो से तीन घंटों में नापी जाती है, तो ये ट्रेनें प्लेन होने का भ्रम पैदा करती हैं! एक नजर ऐसी तूफानी रफ्तार वाली ट्रेनों पर..

जापान की एमएलएक्स 01

हर बार एक नए रूप में आने के बाद इसकी वर्तमान स्पीड है 581 किमी. प्रति घंटा। यह ट्रेन मैग्नेटिक लेविटेशन सिस्टम पर चलती है यानी ट्रैक पर ट्रेन दौड़ती तो है, पर उसे छूती नहीं। इस ट्रेन को डेवलप किया है रेलवे टेक्निकल रिसर्च इंस्टीट्यूट जापान के साथ मिलकर जापान रेलवे कंपनी ने। इसका निर्माण कराया गया 1970 में ही, लेकिन एमएलएक्स 01 है इसका सबसे लेटेस्ट डिजाइन।

फ्रांस की टीजीवीवी150

जब यह ट्रेन बनाई गई यानी 1981 में, तो यह महज दो सौ किलोमीटर की रफ्तार से दौडती थी। पर वर्ष 2007 तक आते-आते यह बन गई दुनिया की दूसरी सबसे तेज रफ्तार से दौडने वाली बुलेट ट्रेन। इसकी उच्च गुणवत्ता को देखकर ही टीजीवी हाईस्पीड टेक्नोलॉजी को दूसरे यूरोपीय देशों में भी अपनाया जाने लगा है। चाहे युनाइटेड्ड्य8200;किंगडम हो, नीदरलैंड या फिर जर्मनी..सबने इस खास टेक्नोलॉजी का लोहा माना।

फ्रांस की टीजीवी

यह टीजीवी 150 का शुरुआती मॉडल है। वर्ष 1981 में इस ट्रेन की रिकॉर्ड स्पीड थी 380 किमी. प्रतिघंटा। लेकिन वर्ष 2007 में यह रफ्तार 574.8 किमी. प्रतिघंटे की तूफानी रफ्तार वाली हो गई। इसके इंजन की शक्ति है तकरीबन 25,000 हॉर्सपॉवर। इस ट्रेन को उस वक्त ईजाद किया गया जब फ्रांस में पेट्रोल का जबरदस्त संकट आ गया था। यह समय था वर्ष 1973।

चीन की शंघाई मेग्लेव ट्रेन

चीन में दुनिया का सबसे लंबा हाई स्पीड रेल नेटवर्क है। संख्या में बात करें, तो यह है तकरीबन 6,000 मील। चीन में ईजाद की गई यह ट्रेन एक दिन में तकरीबन 3, 78,000 हजार पैसेंजर्स को कैरी करती है। इसकी रिकॉर्ड स्पीड है तकरीबन 501 किमी. प्रति घंटा।

जर्मनी की टीआर 07

आमतौर पर तेज रफ्तार वाली बुलेट ट्रेन की आवाज काफी डरावनी होती है, लेकिन जर्मन टीआर 07 को कुछ इस तरह से डिजाइन किया गया है कि यह जब चलती है, तो डरावनी आवाज काफी हद तक दूसरे ट्रेनों से अपेक्षाकृत ज्यादा नियंत्रित रहती है। इस ट्रेन की स्पीड है 434.9 किमी. प्रतिघंटा। टीआर 07 भी मैग्नेटिक लेविटेशन टेक्नोलॉजी पर चलती है। गौरतलब है कि जर्मनी, जापान और चीन के बाद हाई स्पीड रेल टेक्नोलॉजी में अग्रणी है। इसे दुनिया का सबसे बडा हाई स्पीड ट्रेन का निर्माता देश भी माना जाता है।

जापान की शिनकांसेन

हाई स्पीड ट्रेन के क्षेत्र में दुनिया का अग्रणी देश है जापान। जब इस देश ने शिनकांसेन का आविष्कार किया, तो यह था हाई स्पीड ट्रेन की दुनिया में मील का पत्थर। बुलेट ट्रेन की अवधारणा भी इसी के साथ सामने आई। जब यह रेल सेवा शुरू की गई थी, तो इसकी स्पीड थी 210 किलोमीटर प्रति घंटा। आज यह 300 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से ट्रैक पर दौड़ती है।

अंतर बताओ

कविता

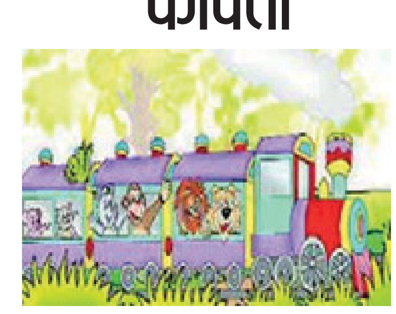

जंगल में जब रेल चली,
मच गई सब में खलबली।
शेर-शेरनी संग में आए,
बैठ रेल में वे इतराए।
आए तोता, बंदर, भालू,
संग थी मिस चीता झगड़ालू।
सुअर, बिल्ली, मैना आए,
बैठ रेल में गाना गाए।
घूम के मेंढक बेचे मूली,
बोझा ढो रहा गधा कूली।
गार्ड उल्लू ने झंडी लहराई,
ड्राइवर चींटी ने रेल चलाई।
छूटा हाथी, बोला रुक-रुक,
रेल चल दी लेकिन छुक-छुक।